यशुमति कान्हहि यह समुझावति

यशुमति कान्हहि यह समुझावति:

यशुमति कान्हहि यह समुझावति,
सुनहु श्याम सब पढ़त लिखत हैं,
इक तुम्हहि बस धेनु चरावत,
यशुमति कान्हहि यह समुझावति-----

ब्रज लरिकन नीक दुलहिन लयिहैं,
बात तोहें काहे समझु न आवति,
यशुमति कान्हहि यह समुझावति-----

ब्रज गोपिन सब दोष मढ़त हैं,
तू फोड़त मटकी चोर कहावत,
यशुमति कान्हहि यह समुझावति----

हँसत हरी सुनि मईया बतियन,
चढ़त गोद मुख अंचरि लुकावति,
यशुमति कान्हहि यह समुझावति---।।

रचना आभार: ज्योति नारायण पाठक
वाराणसी

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/8613/title/yashumati-kanhahi-yah-samujhawati

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |